



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 87-93

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

डॉ० विष्वक्सेन दत्त द्विवेदी

अध्यापक संस्कृत,

उच्च माध्यमिक विद्यालय,

बसन्तपुर, जिला- सिवान, बिहार।

महाकवि कालिदास की कृतियों में शिक्षा-व्यवस्था एवं उसकी समकालीन उपादेयता (राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के विशेष परिप्रेक्ष्य में)

डॉ० विष्वक्सेन दत्त द्विवेदी

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23447920>

सारांश

महाकवि कालिदास की कृतियाँ भारतीय सांस्कृतिक जीवन के विविध आयामों की साहित्यिक अभिव्यक्ति हैं। उनके काव्य और नाटकों में शिक्षा के लिए कोई पृथक् शास्त्रीय ग्रन्थ जैसी क्रमबद्ध व्यवस्था नहीं मिलती, फिर भी आश्रम, गुरु, शिष्य, राजकुमार, तपस्वी, कलाविद्या, वेद-वेदाङ्ग, नीति, अनुशासन, अभ्यास, विनय तथा प्रकृति-सापेक्ष जीवन के अनेक प्रसंग एक समृद्ध शैक्षिक चेतना का संकेत देते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इन्हीं पाठ-साक्ष्यों के आधार पर कालिदास की शिक्षा-दृष्टि का पुनर्निर्माण करना है।

अध्ययन में रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् तथा मालविकाग्निमित्रम् को प्रमुख आधार बनाया गया है। विशेष ध्यान इस बात पर है कि कालिदासीय शिक्षा में ज्ञान और विनय, शास्त्र और व्यवहार, कला और अनुशासन, व्यक्ति और सामाजिक दायित्व तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच किस प्रकार सम्बन्ध निर्मित होता है। रघुवंश के राजवंशीय प्रसंग शिक्षा को शासन-दायित्व से जोड़ते हैं, जबकि अभिज्ञानशाकुन्तलम् का आश्रम जीवन शिक्षा को प्रकृति, सेवा और अनुशासन के साथ रखता है। मालविकाग्निमित्रम् में कलाशिक्षा और प्रशिक्षक की भूमिका का सजीव चित्रण मिलता है।

अध्ययन का दूसरा पक्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के साथ वैचारिक संवाद है। NEP 2020 समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा, आलोचनात्मक चिन्तन, कला, अनुभवात्मक अधिगम, मूल्य-आधारित शिक्षा तथा भारतीय ज्ञान-परम्पराओं के अध्ययन पर बल देती है। इन बिन्दुओं के साथ कालिदासीय पाठों के कुछ सार्थक साम्य दिखाई देते हैं, किन्तु दोनों को ऐतिहासिक रूप से समान ठहराना उचित नहीं है। अतः आलेख कालिदास की शिक्षा-दृष्टि का आधुनिक शिक्षा में पुनर्पाठ प्रस्तुत करता है, न कि प्राचीन व्यवस्था की यथावत पुनर्स्थापना का प्रस्ताव।

मुख्य शब्द : कालिदास, शिक्षा-व्यवस्था, आश्रम, गुरु-शिष्य, विद्या, विनय, कलाशिक्षा, राजशिक्षा, भारतीय ज्ञान-परम्परा, समग्र शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०।

Abstract

This study examines the educational consciousness embedded in the works of Mahākavi Kālidāsa, especially Raghuvamśa, Abhijñānaśākuntalam and Mālavikāgnimitram. Kālidāsa does not present a systematic treatise on education; nevertheless, his literary representation of āśrama life, teachers, learners, royal education, arts training, discipline, knowledge, humility and nature provides significant textual material for reconstructing dimensions of classical Indian educational culture.

Correspondence:

डॉ० विष्वक्सेन दत्त द्विवेदी

अध्यापक संस्कृत,

उच्च माध्यमिक विद्यालय,

बसन्तपुर, जिला- सिवान, बिहार।

The paper analyses these elements through a text-centred and comparative method and then places them in dialogue with selected principles of National Education Policy 2020. The comparison is conceptual rather than historical. It argues that Kālidāsa can offer useful resources for thinking about holistic, value-oriented, multidisciplinary and experiential education, provided that his social context is critically distinguished from the constitutional and democratic requirements of contemporary India.

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी समाज की केवल ज्ञान-संचरण प्रणाली नहीं होती; वह उसके मनुष्य-निर्माण, संस्कृति-संरक्षण और भविष्य-निर्माण की प्रक्रिया भी होती है। इसलिए किसी साहित्यिक परम्परा में शिक्षा की उपस्थिति को केवल विद्यालय, पाठ्यक्रम अथवा परीक्षा की दृष्टि से देखना पर्याप्त नहीं है। शिक्षा के लक्ष्य, शिक्षक की भूमिका, विद्यार्थी का अनुशासन, ज्ञान के प्रकार, व्यावहारिक प्रशिक्षण, कला, नैतिकता और समाज के प्रति उत्तरदायित्व—ये सभी शिक्षा की व्यापक संरचना के अंग हैं।

कालिदास के साहित्य में यही व्यापकता विशेष रूप से दिखाई देती है। उनके यहाँ आश्रम केवल तपस्या का स्थान नहीं, बल्कि जीवन-व्यवस्था का ऐसा परिवेश है जिसमें अध्ययन, सेवा, अनुशासन और प्रकृति के साथ सहजीवन एक-दूसरे से जुड़े हैं। राजकुमारों का प्रशिक्षण केवल शास्त्र-अध्ययन नहीं, भावी राजकीय दायित्व की तैयारी है। कलाशिक्षा केवल मनोरंजन नहीं, दीर्घ अभ्यास और प्रशिक्षक की विशेषज्ञता से जुड़ी हुई है। इसीलिए कालिदास की शिक्षा-दृष्टि का अध्ययन उनके पात्रों और प्रसंगों के समग्र पाठ के आधार पर किया जाना चाहिए।

इस आलेख का मूल प्रश्न है—कालिदास की कृतियों में शिक्षा के कौन-कौन से स्वरूप और उद्देश्य दिखाई देते हैं, और उन तत्त्वों का आज की शिक्षा-व्यवस्था के साथ किस सीमा तक सार्थक संवाद स्थापित किया जा सकता है?

2. शोध-समस्या एवं शोध-प्रश्न

कालिदास पर साहित्यिक, सांस्कृतिक और सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन विपुल मात्रा में उपलब्ध हैं, किन्तु शिक्षा-व्यवस्था को उनकी विभिन्न कृतियों के पाठ-साक्ष्यों के आधार पर एक समन्वित संरचना के रूप में पढ़ने की आवश्यकता बनी रहती है। विशेषतः आधुनिक भारतीय शिक्षा में समग्रता, बहुविषयकता, मूल्यपरकता, कला-सम्मिलन और अनुभवात्मक अधिगम पर बल बढ़ने के कारण कालिदासीय साहित्य का पुनर्पाठ उपयोगी हो सकता है।

मुख्य शोध-प्रश्न हैं—(क) कालिदास के साहित्य में शिक्षा के प्रमुख संस्थागत और सांस्कृतिक परिवेश कौन से हैं? (ख) ज्ञान और विनय का सम्बन्ध किस रूप में व्यक्त होता है? (ग) राजशिक्षा, आश्रम-शिक्षा और कलाशिक्षा में क्या विशिष्टताएँ हैं? (घ) गुरु-शिष्य सम्बन्ध की साहित्यिक अभिव्यक्ति कैसी है? (ङ) इन तत्त्वों का NEP

2020 के समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा-विचार से किस सीमा तक संवाद स्थापित होता है?

3. शोध-उद्देश्य

- कालिदास की प्रमुख कृतियों में निहित शैक्षिक चेतना का पाठ-आधारित अध्ययन करना।
- आश्रम, गुरु-शिष्य सम्बन्ध और अनुशासन को शिक्षा के परिवेश के रूप में समझना।
- ज्ञान, विनय, प्रबोध, नीति, कला और व्यावहारिक दक्षता के परस्पर सम्बन्ध का विश्लेषण करना।
- राजकुमारों तथा स्त्री-पात्रों से सम्बद्ध शिक्षा-साक्ष्यों का आलोचनात्मक परीक्षण करना।
- कालिदासीय शिक्षा-दृष्टि की सीमाओं और संभावनाओं को स्पष्ट करना।
- NEP 2020 के चयनित सिद्धान्तों के साथ इसका वैचारिक संवाद स्थापित करना।

4. शोध-विधि एवं स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन पाठ-विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक और तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत के रूप में कालिदास की रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् तथा कुमारसम्भवम् को ग्रहण किया गया है। पाठ-सन्दर्भों की व्याख्या करते समय प्रत्यक्ष कालिदासीय वचन और अन्य शास्त्रीय स्रोतों से प्राप्त तुलनात्मक सामग्री के बीच स्पष्ट भेद रखा गया है। उदाहरणतः 'कुलपति' की पारम्परिक परिभाषा कालिदास का मूल उद्धरण नहीं है; उसी प्रकार चार विद्याओं की स्पष्ट शास्त्रीय योजना कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलती है, जबकि रघुवंश ३.३० का प्रयोग कालिदासीय पाठ-सन्दर्भ के रूप में किया गया है।

द्वितीयक स्रोतों में प्रामाणिक संस्कृत संस्करण एवं टीकाएँ तथा भारत सरकार का राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० दस्तावेज सम्मिलित हैं। NEP 2020 समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा, विषयों के बीच कठोर विभाजन कम करने, रचनात्मक और आलोचनात्मक चिन्तन, कला-मानविकी सहित विविध क्षेत्रों के समावेश तथा मूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देती है।

5. कालिदासीय शिक्षा-दृष्टि की आधारभूमि

कालिदास की शिक्षा-दृष्टि को समझने के लिए पहले यह देखना आवश्यक है कि उनके साहित्य में 'विद्या' केवल सूचना अथवा स्मृति का पर्याय नहीं है। विद्या का मूल्य उसके द्वारा विकसित दृष्टि, विवेक, विनय और व्यवहार में है। रघुवंश में शास्त्र से सूक्ष्मार्थ-दर्शन की बात आती है। यह संकेत करता है कि शिक्षा का उच्चतर लक्ष्य वस्तुओं को केवल जानना नहीं, उनके सूक्ष्म अर्थ को समझना भी है।

कामं कर्णान्तविश्रान्ते विशाले तस्य लोचने।

चक्षुष्मत्ता तु शास्त्रेण सूक्ष्मकार्यार्थदर्शना॥¹

यहाँ 'शास्त्र' को सूक्ष्म कार्यार्थदर्शी बनाने वाली शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टि से शिक्षा विवेकपूर्ण अवलोकन की क्षमता विकसित करती है। आधुनिक भाषा में इसे आलोचनात्मक

और विश्लेषणात्मक चिन्तन से जोड़ा जा सकता है, यद्यपि दोनों को पूर्णतः समान मानना उचित नहीं होगा।

भगवद्गीता ज्ञान को आन्तरिक परिष्कार की सर्वोच्च शक्ति के रूप में रखती है- न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते²। कालिदास के शास्त्र-सन्दर्भ और गीता के ज्ञान-मूल्य के बीच यह साम्य है कि ज्ञान का प्रयोजन व्यक्ति के भीतर दृष्टि और परिष्कार उत्पन्न करना है। परन्तु गीता का सन्दर्भ आध्यात्मिक आत्मबोध का है, जबकि रघुवंश 4.13 का सन्दर्भ शास्त्रीय ज्ञान से सूक्ष्म कार्यार्थ-दर्शन का है। इस भेद को बनाए रखना आवश्यक है।

6. आश्रम : शिक्षा का जीवन्त परिवेश

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कण्वाश्रम कालिदासीय शिक्षा-दृष्टि को समझने का महत्वपूर्ण पाठ-सन्दर्भ है। आश्रम में प्रकृति, तप, सेवा, अध्ययन और सामाजिक अनुशासन एक-दूसरे से पृथक् नहीं हैं। प्रथमाङ्क में 'कुलपति' शब्द का प्रयोग आश्रम के नेतृत्व और संगठन की ओर संकेत करता है।

अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः।³

आश्रम की 'क्रिया' और अनुशासित दिनचर्या यह संकेत देती है कि शिक्षा किसी कक्ष में सीमित न होकर जीवन-व्यवहार से सम्बद्ध थी। सेवा, संयम, प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व और सामुदायिक जीवन—ये सभी सीखने के अनुभव का हिस्सा बनते हैं।

रम्यास्तपोवनानां प्रतिहृतविघ्नाः क्रियाः समवलोक्य

ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति॥⁴

7. गुरु-शिष्य सम्बन्ध और शिक्षण की मानवीयता

कालिदासीय संसार में शिक्षक केवल पाठ सुनाने वाला व्यक्ति नहीं है। वह परम्परा, अनुशासन और मार्गदर्शन का वाहक है। मालविकाग्निमित्रम् में गणदास और हरदत्त के प्रसंग से कलाशिक्षण में प्रशिक्षक की विशेषज्ञता, अभ्यास और शिष्य की दक्षता का सम्बन्ध स्पष्ट होता है।

इससे शिक्षा में शिक्षक की भूमिका के दो पक्ष उभरते हैं—पहला, विषयगत विशेषज्ञता; दूसरा, शिष्य की क्षमता को पहचानकर उसे विकसित करना। आधुनिक शिक्षा-विज्ञान में भी शिक्षक की भूमिका केवल सूचना-संप्रेषक की न होकर facilitator, mentor और guide की ओर विकसित हुई है। यहाँ समानता ऐतिहासिक समानता नहीं, बल्कि कार्यगत साम्य के स्तर पर समझी जानी चाहिए।

छान्दोग्योपनिषद् का 'आचार्यवान् पुरुषो वेद'⁵ सूत्र ज्ञान में आचार्य की अनिवार्य भूमिका को रेखांकित करता है। कालिदास के आश्रम और कलाशिक्षण के प्रसंगों में भी गुरु/आचार्य केवल सूचना देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि शिष्य की क्षमता को दिशा देने वाला मार्गदर्शक है। मालविकाग्निमित्रम् में शिल्प के प्रशिक्षण का प्रसंग इस बात को पुष्ट करता है कि दक्षता को परिष्कृत करने के लिए प्रशिक्षित आचार्य आवश्यक है।

आधुनिक शिक्षा में mentor और facilitator की अवधारणा के साथ यह एक उपयोगी वैचारिक समानता प्रस्तुत करता है। फिर भी आधुनिक शिक्षक-भूमिका को प्राचीन गुरु-परम्परा का हूबहू

पुनरुत्पादन मानना उचित नहीं है; वर्तमान व्यवस्था में शिक्षक और विद्यार्थी का सम्बन्ध समान गरिमा, संवैधानिक अधिकार और संस्थागत उत्तरदायित्व से विन्यस्त है।

मुण्डकोपनिषद् में ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु के पास जाने का विधान शिक्षा को संवादात्मक और अनुशासित प्रक्रिया बनाता है- तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्॥⁶

कालिदास के आश्रम-परिवेश में भी ज्ञान जीवन-सम्बन्धी अनुशासन और गुरु-मार्गदर्शन के बीच विकसित होता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय शैक्षिक चिन्तन में ज्ञान केवल ग्रन्थ-पठन नहीं, बल्कि योग्य मार्गदर्शक के साथ संवाद और साधना का विषय रहा है।

कालिदास के साहित्य में यह सूत्र दार्शनिक प्रतिपादन के रूप में नहीं आता; उसका साहित्यिक रूप आश्रम-जीवन, प्रशिक्षण और गुरु-शिष्य सम्बन्ध में दिखाई देता है। यही दोनों स्रोतों के बीच महत्वपूर्ण तुलनात्मक भेद है।

8. पाठ्यक्रम की व्यापकता : अनेक विद्याओं का समन्वय

धियः समग्रैः स गुणैरुदारधीः क्रमाञ्जतस्रश्चतुर्णवोपमाः।⁷ रघुवंश के इस पद में राजकुमार की शिक्षा और उसकी व्यापक बौद्धिक क्षमता का संकेत मिलता है। 'चतस्रः' को सीधे कौटिल्य की चार विद्याओं का पर्याय घोषित करना पाठ-वैज्ञानिक दृष्टि से सावधानीपूर्ण नहीं होगा। फिर भी भारतीय राजकीय शिक्षा की व्यापक परम्परा के साथ तुलनात्मक अध्ययन में कौटिल्य का अर्थशास्त्र उपयोगी है, जहाँ आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति को विद्याओं के रूप में व्यवस्थित किया गया है।

इस तुलनात्मक आधार से शिक्षा की बहुविषयक प्रकृति सामने आती है—दर्शन और विचार, वैदिक-अध्ययन, आर्थिक जीवन तथा शासन-कौशल जैसे क्षेत्रों का परस्पर सम्बन्ध। आधुनिक बहुविषयक शिक्षा से इसका वैचारिक संवाद सम्भव है, पर इसे NEP 2020 का प्राचीन प्रतिरूप कहना अतिशयोक्ति होगी।

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्च इति विद्याः।⁸

कौटिल्य चार विद्याओं—आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति—को व्यवस्थित रूप से निर्दिष्ट करते हैं। आन्वीक्षिकी में सांख्य, योग और लोकायत; त्रयी में वैदिक ज्ञान; वार्ता में कृषि, पशुपालन और व्यापार; तथा दण्डनीति में शासन का ज्ञान सम्मिलित है। इससे शिक्षा को जीवन के बौद्धिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और राजकीय पक्षों से जोड़ने वाली व्यापक दृष्टि स्पष्ट होती है।

रघुवंश के इस पद को कौटिल्य की चार विद्याओं का प्रत्यक्ष पर्याय नहीं कहा जाना चाहिए। दोनों का सम्बन्ध तुलनात्मक है। रघुवंश में राजकुमार की समग्र बौद्धिक क्षमता और चारfold विस्तार का काव्यात्मक संकेत है, जबकि अर्थशास्त्र में चार विद्याओं का स्पष्ट वर्गीकरण है। इस तुलना से राजकीय शिक्षा में बहुआयामिता का विचार अधिक स्पष्ट होता है।

9. वेद-वेदाङ्ग और भारतीय ज्ञान-परम्परा

साङ्गं च वेदमध्याप्य किञ्चिदुत्क्रान्तशैशवौ।⁹ रघुवंश का यह पाठ लव-कुश की शिक्षा के प्रसंग में वेद के साथ उसके अङ्गों के अध्ययन

की ओर संकेत करता है। यहाँ पाठ्यक्रम में परम्परागत ज्ञान-संरचनाओं का समावेश दिखाई देता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि ज्ञान को केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि परम्परा और अभ्यास से जुड़े समग्र अनुशासन के रूप में देखा गया है। समकालीन सन्दर्भ में इसका अर्थ प्राचीन विषयों को यथावत पाठ्यक्रम में रख देना नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परम्पराओं का आलोचनात्मक, ऐतिहासिक और अकादमिक अध्ययन करना है। NEP 2020 भी भारतीय ज्ञान-परम्परा और विविध विषयों के समन्वय की दिशा में बल देती है।

१०. विद्या और विनय : शिक्षा का नैतिक आयाम

सुतौ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्रा सुषुवे यमौ।

सम्यगागमिता विद्या प्रबोधविनयाविव॥¹⁰

‘प्रबोध’ और ‘विनय’ की उपमा शिक्षा के दो परस्परपूरक पक्षों को सामने लाती है। प्रबोध ज्ञानात्मक जागरण है, जबकि विनय उस ज्ञान के व्यवहारगत संस्कार का प्रतीक है। इस दृष्टि से विद्या का चरम फल केवल बौद्धिक क्षमता नहीं, बल्कि संयमित और उत्तरदायी व्यक्तित्व है।

आज जब शिक्षा के परिणामों को रोजगार और दक्षता से जोड़ना आवश्यक है, तब भी मूल्य-बोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक विवेक की उपेक्षा शिक्षा को अधूरा बना सकती है। NEP 2020 भी नैतिक, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों पर बल देती है।

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः॥¹¹

तैत्तिरीयोपनिषद् का यह दीक्षान्तोपदेश शिक्षा के लक्ष्य को सत्य, धर्म, स्वाध्याय, गुरु के प्रति कर्तव्य और सामाजिक निरन्तरता से जोड़ता है। कालिदास के ‘सम्यगागमिता विद्या प्रबोधविनयाविव’ में शिक्षा के फल के रूप में प्रबोध और विनय का जो समन्वय दिखाई देता है, वह इसी व्यापक भारतीय शैक्षिक आदर्श के साथ तुलनीय है। दोनों स्थानों पर शिक्षा केवल बौद्धिक संचय नहीं, बल्कि आचरणगत परिवर्तन का साधन बनती है।

अन्तर यह है कि उपनिषद् प्रत्यक्ष रूप से शिष्य को दीक्षान्त निर्देश देता है, जबकि कालिदास काव्यात्मक उपमा के माध्यम से शिक्षा के परिणाम को व्यक्त करते हैं। इसलिए कालिदासीय पाठ को उपनिषद् का प्रतिरूप न कहकर भारतीय मूल्यपरक शिक्षा-परम्परा के साहित्यिक रूपान्तरण के रूप में पढ़ना अधिक उचित है।

यहाँ ‘विद्या’ के दो परिणाम—‘प्रबोध’ और ‘विनय’—विशेष महत्त्व रखते हैं। प्रबोध व्यक्ति को जानने और समझने की शक्ति देता है, जबकि विनय उस ज्ञान को सामाजिक व्यवहार में संयमित करता है। तैत्तिरीयोपनिषद् का ‘सत्यं वद। धर्मं चर।’ और कालिदास का ‘प्रबोधविनय’ एक ही व्यापक मूल्यपरक शिक्षा-दृष्टि के अलग साहित्यिक रूपों के रूप में पढ़े जा सकते हैं।

इसी आधार पर कालिदासीय शिक्षा को तीन स्तरों में समझा जा सकता है—ज्ञानात्मक विकास, व्यवहारगत विनय और सामाजिक उत्तरदायित्व। यह त्रिस्तरीय संरचना वर्तमान शिक्षा में cognitive, ethical और social development के बीच संवाद स्थापित करने में सहायक हो सकती है।

11. राजकुमारों की शिक्षा : ज्ञान से राजकीय दायित्व तक

रघुवंश में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण आयाम राजकीय उत्तरदायित्व की तैयारी है। राजकुमार का शिक्षित होना केवल विद्वान होना नहीं, बल्कि शासन, नीति, लोककल्याण और संकट-प्रबन्धन के लिए सक्षम होना है। इस परिप्रेक्ष्य में शास्त्र और व्यवहार का सम्बन्ध विशेष महत्त्व रखता है।

कालिदासीय राजशिक्षा को आधुनिक प्रशासनिक शिक्षा का प्रत्यक्ष पूर्वरूप कहना उचित नहीं होगा, किन्तु इससे एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त सामने आता है—ज्ञान का मूल्य उसके उत्तरदायी प्रयोग में है। नेतृत्व-शिक्षा में यह बिन्दु आज भी उपयोगी है।

वार्तामूलो ह्ययं लोकोज्यं वै वार्तायां स्थितः सदा।

तस्माद्वर्ते सम्यग्वर्तेत तस्माद् भूमिपः॥¹²

महाभारत का यह पद वार्ता को लोकजीवन के आधार के रूप में देखता है। कौटिल्य भी वार्ता को कृषि, पशुपालन और व्यापार से जोड़ते हैं। कालिदास के राजवंशीय आख्यान में शिक्षा का सम्बन्ध राजकीय दायित्व और लोकव्यवस्था से जोड़कर पढ़ा जा सकता है। इस तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का अर्थ केवल व्यक्तिगत विद्वत्ता नहीं, बल्कि समाज के संचालन के लिए आवश्यक विवेक और दक्षता भी है।

यहाँ कालिदास, महाभारत और अर्थशास्त्र तीन अलग-अलग साहित्यिक-शास्त्रीय विधाओं में एक व्यापक सूत्र साझा करते दिखाई देते हैं—ज्ञान का मूल्य लोकजीवन से उसके सम्बन्ध में है।

अर्थशास्त्र में शासन-ज्ञान का लक्ष्य व्यवस्था और लोकजीवन का संरक्षण है। दण्डनीति को केवल दण्ड देने की तकनीक न मानकर शासन-विज्ञान के रूप में रखा गया है।

चतुर्वर्णाश्रमो लोको राज्ञा दण्डेन पालितः स्वधर्मकर्माभिरतो वर्तते स्वेषु वर्त्मसु॥¹³

कालिदासीय राजशिक्षा के साथ इसका तुलनात्मक अध्ययन यह बताता है कि राजकुमार के ज्ञान में नीति और शासन-दायित्व का समावेश स्वाभाविक था।

आधुनिक लोकतान्त्रिक शिक्षा में इसका रूप बदल जाता है—राजकीय शिक्षा का लक्ष्य किसी एक शासक की शक्ति-संवर्धन नहीं, बल्कि संवैधानिक शासन, नागरिक उत्तरदायित्व, न्याय और लोककल्याण की समझ विकसित करना है।

12. कला-शिक्षा : मालविकाग्निमित्रम् का महत्त्व

पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः॥¹⁴ कालिदास का यह प्रसिद्ध पद शिल्प अथवा कला में प्रशिक्षण की भूमिका को रेखांकित करता है। कला केवल जन्मजात प्रतिभा का परिणाम नहीं; उचित पात्र, प्रशिक्षक और अभ्यास के माध्यम से उसमें गुण का

विकास सम्भव है। मालविका के नृत्य-प्रशिक्षण और गुरु-परम्परा के प्रसंग इस तथ्य को नाटकीय रूप देते हैं।

आधुनिक शिक्षा में कला-सम्मिलित अधिगम, सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति को महत्व दिया जा रहा है। NEP 2020 भी कला, मानविकी और अन्य विषयों के बीच कठोर विभाजन समाप्त करने तथा बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा देती है।

कालिदासीय कलाशिक्षा में 'पात्रविशेष' और 'शिल्प' का सम्बन्ध प्रतिभा और प्रशिक्षण की अन्तःक्रिया को सामने लाता है। शिष्य में निहित क्षमता को योग्य शिक्षक और अभ्यास द्वारा परिष्कृत किया जाता है। यह कला को शिक्षा के हाशिये से निकालकर व्यक्तित्व-निर्माण के केन्द्र में रखता है।

नाट्यशास्त्रीय परम्परा में भी कला को व्यवस्थित प्रशिक्षण, अंगिक-अभिनय, वाचिकता, संगीत और अभ्यास से जोड़ा गया है। इसलिए मालविकाग्निमित्रम् के कला-प्रसंग को व्यापक भारतीय प्रदर्शन-कला परम्परा के भीतर पढ़ने से उसका शैक्षिक महत्व और स्पष्ट होता है।

13. ज्ञान, जीविका और शिक्षा का व्यापक प्रयोजन

लब्धास्पदोऽस्मीति विवादभीरोस्तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्।

यस्यागमः केवलजीविकैव तं ज्ञानपण्यं वणिजं वदन्ति॥¹⁵

इस पद में ज्ञान को केवल जीविका का साधन बना देने की प्रवृत्ति पर तीखी टिप्पणी है। 'ज्ञानपण्य' की संज्ञा उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो ज्ञान को मात्र व्यापार बना देता है। यहाँ शिक्षा के व्यापक सांस्कृतिक और नैतिक प्रयोजन की ओर संकेत मिलता है। समकालीन संदर्भ में यह प्रश्न अत्यन्त प्रासंगिक है कि क्या शिक्षा केवल रोजगार-योग्यता तक सीमित हो सकती है। रोजगार शिक्षा का महत्वपूर्ण परिणाम है, किन्तु नागरिकता, नैतिक विवेक, सृजनात्मकता और सामाजिक उत्तरदायित्व भी शिक्षा के वैध लक्ष्य हैं।

यहाँ ज्ञान को केवल जीविका के साधन में सीमित कर देने पर प्रश्न उठाया गया है। कालिदासीय आलोचना का केन्द्र जीविका-विरोध नहीं, बल्कि ज्ञान के व्यापक प्रयोजन का संकुचन है। शिक्षा से आजीविका की तैयारी आवश्यक है, परन्तु शिक्षा यदि विवेक, नागरिकता, संस्कृति और नैतिक उत्तरदायित्व से पूर्णतः अलग हो जाए तो उसका सामाजिक प्रयोजन सीमित हो जाता है।

14. अनुभवात्मक अधिगम और जीवन-सापेक्ष शिक्षा

कालिदासीय आश्रम-जीवन में शिक्षा और जीवन का पृथक्करण कम दिखाई देता है। शिष्य जिस परिवेश में रहता है, उसी में सेवा, अनुशासन, प्रकृति-सम्बन्ध और सामुदायिक दायित्व सीखता है। इस दृष्टि से आश्रम को 'जीवन्त अधिगम-परिवेश' के रूप में पढ़ा जा सकता है।

आधुनिक experiential learning की संकल्पना इससे पूरी तरह समान नहीं है, फिर भी दोनों में अनुभव, क्रिया और चिंतन के बीच सम्बन्ध स्थापित करने की उपयोगी समानता दिखाई देती है। NEP 2020 भी शिक्षा को गतिविधि, चर्चा, परियोजना, अनुसन्धान और व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ने की दिशा में बल देती है।

15. प्रकृति और शिक्षा

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का आश्रम-परिवेश मनुष्य और प्रकृति के निकट सम्बन्ध का अत्यन्त संवेदनशील साहित्यिक रूप प्रस्तुत करता है। वृक्षों, लताओं, मृगों और आश्रम-जीवन के प्रति आत्मीयता शिक्षा के सांस्कृतिक परिवेश को प्रकृति से जोड़ती है। इसे आधुनिक पर्यावरण-शिक्षा का प्रत्यक्ष ऐतिहासिक सिद्धान्त कहना उचित नहीं होगा, परन्तु प्रकृति-सापेक्ष जीवन-मूल्य के रूप में इसका पुनर्पाठ किया जा सकता है।

NEP 2020 में पर्यावरणीय शिक्षा, जैव-विविधता, संरक्षण और सतत् जीवन से सम्बन्धित विषयों को समग्र शिक्षा के भीतर स्थान देने की बात कही गई है। इस स्तर पर कालिदासीय प्रकृति-दृष्टि आधुनिक पर्यावरणीय संवेदना के लिए सांस्कृतिक संसाधन बन सकती है।

16. स्त्री-शिक्षा : उपलब्ध पाठ-साक्ष्य और उसकी सीमा

मालविकाग्निमित्रम् में मालविका के नृत्य एवं कलात्मक प्रशिक्षण का प्रसंग स्त्री-पात्रों के लिए विशिष्ट कलाशिक्षा की उपस्थिति का साहित्यिक संकेत देता है। किन्तु एक पात्र के उदाहरण से समस्त स्त्रियों के लिए सार्वभौमिक शिक्षा-व्यवस्था का निष्कर्ष निकालना इतिहासलेखन की दृष्टि से उचित नहीं होगा।

इसलिए कालिदासीय स्त्री-शिक्षा पर चर्चा करते समय दो बातें साथ रखनी आवश्यक हैं—पहली, उपलब्ध पाठ-साक्ष्य का महत्व; दूसरी, उस साक्ष्य की सीमाएँ। आधुनिक शिक्षा में लैंगिक समानता और समान अवसर संवैधानिक तथा सामाजिक लक्ष्य हैं; इसलिए प्राचीन साहित्य से प्रेरणा लेते समय वर्तमान मानकों को भी निर्णायक रूप से ध्यान में रखना चाहिए।

17. अनुशासन, अभ्यास और दक्षता

कालिदास की शिक्षा-दृष्टि में अभ्यास का स्थान विशेष है। कला हो या शास्त्र, दक्षता निरन्तर साधना से विकसित होती है। मालविका के नृत्य-प्रशिक्षण से यह स्पष्ट होता है कि कलात्मक प्रतिभा को प्रशिक्षित करने के लिए गुरु, अभ्यास और प्रदर्शन—तीनों आवश्यक हैं।

इससे शिक्षा के एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त की ओर संकेत मिलता है—प्रतिभा और प्रशिक्षण परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि परस्परपूरक हैं। आधुनिक कौशल-आधारित शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और कला-शिक्षा के लिए यह दृष्टि उपयोगी है।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्¹⁶ गीता का यह सूत्र शिक्षा का प्रत्यक्ष सिद्धान्त नहीं है, फिर भी विद्यार्थी की आत्मप्रेरणा और आत्मनियमन के संदर्भ में अत्यन्त उपयोगी तुलनात्मक प्रमाण है। कालिदासीय शिक्षा में भी अभ्यास, अनुशासन और प्रशिक्षण के बिना दक्षता पूर्ण नहीं होती। विशेषतः कलाशिक्षा के प्रसंगों में प्रतिभा को साधना के माध्यम से विकसित करने का विचार सामने आता है।

इससे आधुनिक self-directed learning और lifelong learning की दिशा में एक वैचारिक संवाद स्थापित किया जा सकता है। लेकिन गीता के मूल सन्दर्भ को आध्यात्मिक आत्मोन्नति का ही मानना चाहिए; आधुनिक शैक्षिक सिद्धान्त केवल तुलनात्मक स्तर पर जोड़ा जा सकता है।

18. कालिदासीय शिक्षा-दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ-

शैक्षिक तत्त्व	कालिदासीय पाठ-सन्दर्भ	समकालीन अर्थ
आश्रम-परिवेश	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	जीवन्त एवं अनुभवात्मक अधिगम
सूक्ष्मदर्शी ज्ञान	रघुवंश 4.13	विश्लेषणात्मक/आलोचनात्मक चिन्तन
विविध विद्याएँ	रघुवंश 3.30	बहुविषयकता का वैचारिक संवाद
वेद-वेदाङ्ग	रघुवंश 15.33	भारतीय ज्ञान-परम्परा का अध्ययन
प्रबोध-विनय	रघुवंश 10.72	ज्ञान एवं मूल्य-आधारित व्यक्तित्व
कलाशिक्षा	मालविकाग्निमित्रम् 1.6	कला-सम्मिलित शिक्षा
शिक्षक की विशेषज्ञता	मालविकाग्निमित्रम् 1.6	मार्गदर्शक/mentor की भूमिका
ज्ञान का व्यापक प्रयोजन	मालविकाग्निमित्रम् 1.17	शिक्षा का नैतिक-सामाजिक उद्देश्य

शास्त्रीय प्रमाणों का तुलनात्मक सार-

विषय	कालिदासीय प्रमाण	अन्य शास्त्रीय प्रमाण	तुलनात्मक निष्कर्ष
शिक्षा का लक्ष्य	रघुवंश 10.72- प्रबोध-विनय	तैत्तिरीयोपनिषद् 1.11.1—सत्य, धर्म, स्वाध्याय	ज्ञान और आचरण का समन्वय
गुरु की भूमिका	आश्रम एवं मालविका-ग्निमित्रम् 1.6	छान्दोग्य 4.14.1; मुण्डक 1.2.12	मार्गदर्शन और संवाद
विवेक	रघुवंश 4.13- सूक्ष्मार्थ-दर्शन	गीता 4.38—ज्ञान का परिष्कार	ज्ञान का रूपान्तरण-कारी पक्ष
बहुविषयकता	रघुवंश 3.30	अर्थशास्त्र 1.21—चार विद्याएँ	ज्ञान की बहुआयामी संरचना
राजकीय शिक्षा	रघुवंश के राजवंशीय प्रसंग	अर्थशास्त्र—दण्डनीति/वार्ता	ज्ञान और शासन-दायित्व
कला-शिक्षा	मालविकाग्निमित्रम् 1.6	नाट्यशास्त्रीय प्रशिक्षण-परम्परा	अभ्यास और विशेषज्ञता
ज्ञान का प्रयोजन	मालविकाग्निमित्रम् 1.17	उपनिषद् का स्वाध्याय-आदर्श	ज्ञान का व्यापक नैतिक-सांस्कृतिक प्रयोजन

19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ वैचारिक संवाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समग्र और बहुविषयक शिक्षा, रचनात्मक तथा आलोचनात्मक चिन्तन, विषयों के बीच कठोर विभाजन कम करने, कला-मानविकी के समावेश और मूल्य-आधारित शिक्षा की दिशा प्रस्तुत करती है। आधिकारिक दस्तावेज में सामुदायिक सहभागिता, पर्यावरणीय शिक्षा, मूल्य-आधारित शिक्षा तथा व्यावहारिक अधिगम पर भी बल दिया गया है। (भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

कालिदासीय साहित्य के साथ इसका संवाद पाँच प्रमुख स्तरों पर स्थापित किया जा सकता है—(1) ज्ञान की समग्रता, (2) बहुविषयकता, (3) कला और सृजनात्मकता, (4) अनुभव एवं व्यवहार, तथा (5) मूल्य और विनय। किन्तु यह तुलना वैचारिक है;

कालिदास का सामाजिक-सांस्कृतिक संसार आधुनिक लोकतान्त्रिक, संवैधानिक और समानतामूलक शिक्षा-व्यवस्था से भिन्न था।

अतः कालिदास से आज के लिए जो ग्रहणीय है वह है—ज्ञान के प्रति गम्भीरता, गुरु-मार्गदर्शन, अभ्यास, विनय, कला, प्रकृति और सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना। जो ऐतिहासिक रूप से भिन्न है, उसे आधुनिक व्यवस्था पर यथावत आरोपित नहीं किया जाना चाहिए।

21. आलोचनात्मक विमर्श : सीमाएँ और सावधानियाँ

कालिदासीय शिक्षा-व्यवस्था का पुनर्निर्माण साहित्यिक पाठों से किया जा रहा है, इसलिए उसे पूर्ण ऐतिहासिक विवरण नहीं माना जा सकता। साहित्य का उद्देश्य केवल सामाजिक संस्थाओं का दस्तावेजीकरण नहीं होता। अतः किसी काव्यात्मक या नाटकीय प्रसंग से सम्पूर्ण समाज की शिक्षा-व्यवस्था का निष्कर्ष निकालते समय प्रमाण की सीमा स्वीकार करनी चाहिए।

दूसरी सावधानी यह है कि प्राचीन शिक्षा के आदर्शों को आधुनिक शिक्षा की समस्याओं का स्वतः समाधान मानना उचित नहीं है। आज समान अवसर, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवैधानिक मूल्य और तकनीकी दक्षता शिक्षा के आवश्यक आयाम हैं। इसलिए कालिदासीय परम्परा का उपयोग पुनर्सृजनात्मक संवाद के रूप में होना चाहिए।

21. समकालीन शिक्षा के लिए कालिदास की उपादेयता

पहला, शिक्षा में ज्ञान और चरित्र का सम्बन्ध पुनर्स्थापित किया जा सकता है। दूसरा, विषयगत विशेषज्ञता के साथ बहुविषयक दृष्टि विकसित की जा सकती है। तीसरा, कला, साहित्य, संगीत और नाटक को शिक्षा की परिधि में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व-विकास के साधन के रूप में देखा जा सकता है। चौथा, प्रकृति और स्थानीय परिवेश को अधिगम से जोड़ा जा सकता है। पाँचवाँ, शिक्षक को केवल सूचना-प्रदाता न मानकर मार्गदर्शक और प्रेरक की भूमिका में सुदृढ़ किया जा सकता है।

छठा, शिक्षा को परीक्षा और प्रमाणपत्र से आगे ले जाकर विवेक, विनय और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जा सकता है। सातवाँ, भारतीय ज्ञान-परम्परा का अध्ययन भावनात्मक आग्रह से नहीं, बल्कि आलोचनात्मक, प्रमाणाधारित और बहुविषयक अकादमिक पद्धति से किया जा सकता है। यही वह बिन्दु है जहाँ कालिदासीय साहित्य और आधुनिक शिक्षा के बीच सार्थक संवाद सम्भव होता है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कालिदासीय शिक्षा को केवल 'गुरुकुल' या 'प्राचीन शिक्षा' की संज्ञा देकर समाप्त नहीं किया जा सकता। उसमें कम-से-कम सात परस्पर सम्बद्ध आयाम हैं—ज्ञान, विवेक, विनय, गुरु-मार्गदर्शन, अभ्यास, बहुविषयकता और लोकदायित्व। उपनिषद् इन आयामों को आत्मबोध और आचार से जोड़ते हैं; अर्थशास्त्र उन्हें शासन, अर्थ और तर्क के क्षेत्र तक विस्तृत करता है; महाभारत लोकजीवन और वार्ता की ओर संकेत करता है;

और कालिदास इन व्यापक विचारों को पात्रों, आश्रमों, राजपरम्परा और कला के सौन्दर्यपूर्ण साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करते हैं।

अतः समकालीन शिक्षा के लिए कालिदास की वास्तविक उपादेयता किसी प्राचीन संस्थागत व्यवस्था की पुनरावृत्ति में नहीं, बल्कि शिक्षा के उद्देश्यों के पुनर्विचार में है। ज्ञान को विवेक से, विवेक को विनय से, विनय को सामाजिक उत्तरदायित्व से और दक्षता को नैतिक प्रयोजन से जोड़ना आज भी शिक्षा की एक सार्थक दिशा हो सकती है।

22. निष्कर्ष

महाकवि कालिदास की कृतियों में शिक्षा-व्यवस्था का कोई पृथक् शास्त्रीय प्रतिपादन नहीं है, किन्तु उनकी रचनाओं में बिखरे पाठ-साक्ष्यों को समेकित करने पर शिक्षा की एक व्यापक सांस्कृतिक अवधारणा सामने आती है। आश्रम ज्ञान, अनुशासन, सेवा और प्रकृति का परिवेश है; गुरु मार्गदर्शक और प्रशिक्षक है; विद्यार्थी अभ्यास तथा विनय से विकसित होता है; राजकुमार की शिक्षा उसे सामाजिक और राजकीय दायित्व के योग्य बनाती है; कला-शिक्षा प्रतिभा को अभ्यास और प्रशिक्षण से दक्षता में बदलती है; और ज्ञान का मूल्य उसके नैतिक एवं सामाजिक प्रयोजन से निर्धारित होता है। कालिदास की शिक्षा-दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि ज्ञान को व्यक्तित्व से अलग नहीं किया जा सकता। प्रबोध के साथ विनय, शास्त्र के साथ सूक्ष्मदर्शिता, कला के साथ अभ्यास, और शिक्षा के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व—ये उनके साहित्य से उभरने वाले प्रमुख शैक्षिक सूत्र हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समग्र, बहुविषयक, मूल्यपरक, कला-सम्मिलित और अनुभवात्मक शिक्षा-विचारों के साथ इन सूत्रों का वैचारिक संवाद सम्भव है। परन्तु इस संवाद की सार्थकता तभी होगी जब कालिदास के साहित्य को उसके ऐतिहासिक सन्दर्भ में समझते हुए आधुनिक संवैधानिक मूल्यों और शिक्षा-विज्ञान के साथ रचनात्मक रूप से जोड़ा जाए। इस अर्थ में कालिदास केवल अतीत के कवि नहीं, बल्कि शिक्षा के उद्देश्यों पर वर्तमान में भी विचार करने के लिए महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्रोत हैं।

सन्दर्भ-टिप्पणियाँ

¹कालिदास, रघुवंशम्, 4.13

²भगवद्गीता, 4.38

³कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, प्रथमाङ्क

⁴कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, प्रथमाङ्क

⁵छान्दोग्योपनिषद्, 4.14.1

⁶मुण्डकोपनिषद्, 1.2.

⁷रघुवंशम्, 3.30

⁸कौटिलीय अर्थशास्त्रम्, 1.2.1

⁹रघुवंशम्, 15.33

¹⁰रघुवंशम्, 10.72

¹¹तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली 1.11.1

¹²महाभारत, शान्तिपर्व, 68.45

¹³कौटिलीय अर्थशास्त्रम्, 1.4

¹⁴मालविकाग्निमित्रम्, 1.6

¹⁵मालविकाग्निमित्रम्, 1.17

¹⁶भगवद्गीता, 6.5

ग्रन्थ-सूची

1. कालिदास. रघुवंशम्. मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी-व्याख्यासहित प्रामाणिक संस्करण।
2. कालिदास. अभिज्ञानशाकुन्तलम्. प्रामाणिक संस्कृत पाठ एवं टीकाएँ।
3. कालिदास. मालविकाग्निमित्रम्. प्रामाणिक संस्कृत पाठ एवं टीकाएँ।
4. कालिदास. कुमारसम्भवम्. प्रामाणिक संस्कृत पाठ एवं टीकाएँ।
5. कौटिल्य. अर्थशास्त्रम्. प्रामाणिक संस्कृत संस्करण।
6. तैत्तिरीयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद् एवं मुण्डकोपनिषद्. प्रामाणिक संस्कृत संस्करण।
7. वेदव्यास. श्रीमद्भगवद्गीता. गीताप्रेस, गोरखपुर।
8. वेदव्यास. महाभारतम्. शान्तिपर्व एवं अनुशासनपर्व।
9. भरतमुनि. नाट्यशास्त्रम्. नाट्य एवं अभिनय-प्रशिक्षण सम्बन्धी प्रकरण।
10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०. नई दिल्ली।
11. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग. भारतीय ज्ञान-परम्परा/भारतीय ज्ञान प्रणाली सम्बन्धी दस्तावेज।
12. Dasgupta, Debendra Chandra. "Educational Ideas in Kalidasa's India." Prabuddha Bharata, 1942.
13. पाठक, रजनीश कुमार. कालिदास-साहित्य एवं भारतीय शिक्षा-परम्परा सम्बन्धी शोध-साहित्य।
14. प्रमुख उपनिषद्. प्रामाणिक संस्कृत संस्करण।